ISSN: 2393-8048
International Conference of Education New Policy Relative to Computer
Venue: Sri Vinayak Mahavidhalya, Sri Vijaynagar, Rajasthan
23 May 2019

कबीर की सामाजिक चेतना

Premlata, Research Scholar (Hindi), Janaradan Rai Nagar Vidyapeeth, Udaipur (Rajasthan)

सारांश

कबीर हिंदी साहित्य के भक्तिकाल के ऐसे प्रमुख संत-कवि हैं, जिनकी वाणी में आध्यात्मिक चेतना के साथ-साथ गहरी सामाजिक चेतना भी दिखाई देती है। उन्होंने अपने समय में व्याप्त धार्मिक आडंबर, जातिगत भेदभाव, ऊँच-नीच, पाखंड, रूढ़ियों तथा सामाजिक असमानताओं का निर्भीकता से विरोध किया। कबीर का समाज मध्यकालीन भारतीय समाज था, जहाँ धर्म के नाम पर कर्मकांड और बाह्याचार का प्रभाव बढ़ रहा था तथा जाति और संप्रदाय के आधार पर मनुष्य-मनुष्य के बीच विभाजन मौजूद था। कबीर ने इन विसंगतियों पर तीखा प्रहार करते हुए मनुष्य की श्रेष्ठता को उसके जन्म या जाति के बजाय उसके आचरण और मानवीय मूल्यों से जोड़ा।

कबीर की सामाजिक चेतना का मूल आधार मानवतावाद, समानता, प्रेम और सत्य है। उन्होंने हिंदू और मुस्लिम दोनों समुदायों में प्रचलित रूढ़ धार्मिक मान्यताओं की आलोचना की और बाहरी पूजा-पद्धतियों के स्थान पर आत्मज्ञान तथा आंतरिक शुद्धता को महत्त्व दिया। उनकी साखियों और दोहों में श्रम, सरल जीवन, सदाचार और सामाजिक समरसता का संदेश मिलता है। कबीर की भाषा लोकजीवन से जुड़ी होने के कारण उनकी सामाजिक दृष्टि व्यापक जनसमुदाय तक पहुँची। उनकी वाणी केवल तत्कालीन समाज की आलोचना नहीं करती, बल्कि एक ऐसे समाज की कल्पना प्रस्तुत करती है जिसमें भेदभाव समाप्त हो और मनुष्य को मनुष्य के रूप में सम्मान मिले। इस दृष्टि से कबीर की सामाजिक चेतना आज भी सामाजिक समानता, धार्मिक सहिष्णुता और मानवीय गरिमा के संदर्भ में अत्यंत प्रासंगिक है।

बीज शब्द: कबीर, सामाजिक चेतना, मानवतावाद, जाति-विरोध, धार्मिक पाखंड, सामाजिक समानता, समरसता, भक्ति आंदोलन, रूढ़िवाद, मानवीय मूल्य।